हज्ज मबरूर और उसकी फ़ज़ीलत

الحج المبرور وفضله

< باللغة الهندية >

अब्दुल्लाह रजा अर्रोक़ी

عبد الله رجا الروقي

अनुवाद : अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

हज्ज मबरुर और उसकी फज़ीलत

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करनेवाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देनेवाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

हज्ज मबरुर और उसकी फज़ीलत

हज्ज की प्रतिष्ठा महान और उसकी श्रेष्ठता बहुत भारी है। उसकी प्रतिष्ठा व प्रमुखता का पता इस बात से चलता है कि वह इस्लाम के मूल स्तंभों और उसके महान आधारशिलाओं में से एक आधार है। यदि वह अल्लाह सर्वशक्तिमान के निकट सबसे पसंदीदा कार्यों में से न होता, तो अल्लाह तआला उसे अपने बंदों पर अनिवार्य न करता। हदीस कुदसी में है कि अल्लाह तआला ने फरमाया : ''मेरे बंदे

ने किसी ऐसी चीज़ के द्वारा मेरी निकटता नहीं प्राप्त की जो मेरे निकट उस चीज़ से बढ़कर पसंदीदा और प्रिय हो जिसे मैं ने उसके ऊपर अनिवार्य किया है।'' इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

हज्ज मबरूर वह हज्ज है जिसके अंदर चार चीज़ें पाई जाएं :

प्रथम : अल्लाह सर्वशक्तिमान के लिए इख्लास (निःस्वार्थता)।

दूसरा : अपने हज्ज में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण करना। चुनाँचे हज्ज करनेवाला हज्ज को सीखने का लालायित बने ताकि वह हज्ज को शरई तरीक़े पर अंजाम दे सके।

तीसरा : वह हलाल धन से हो।

चौथा : वह गुनाहों से खाली हो। चुनाँचे हज्ज करनेवाला यथासंभव पाप और अवहेलना में पड़ने से बचे और दूर रहे, जैसे : गीबत, हराम चीज़ें देखना, म्यूज़िक सुनना। तथा वह नेक संगति का इच्छुक बने जो इस पर उसकी मदद कर सके, तथा बुरे साथियों से बचे क्योंकि उनके कारण वह अवज्ञा व पाप में पड़ सकता है विशेषकर गीबत जो बड़े गुनाहों में से है।

अल्लामा इब्ने उसैमीन रहिमहुल्लाह फरमाते हैं : उसी में से यह भी है कि औरत बिना महरम के हज्ज न करे। यदि उसने बिना महरम के हज्ज किया तो उसका हज्ज मबरूर नहीं होगा।

आप रहिमहुल्लाह का मतलब यह है कि जिस महिला ने बिना महरम के हज्ज किया तो वह अवज्ञा व पाप में पड़ गई। अतः उसका हज्ज मबरूर होने से खारिज हो गया।

हज्ज मबरूर की प्रतिष्ठा व श्रेष्ठता के बारे में कई प्रमाण आए हैं :

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहा कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना : ''जिसने इस घर का हज्ज किया और (उसके दौरान) संभोग (और कामुक वार्तालाप) तथा गुनाह और नाफरमानी (पाप एवं अवज्ञा) नहीं किया तो वह उस दिन के समान (निर्दोष) हो जाता है जिस दिन उसकी माँ ने उसे जना था।'' (बुखारी व मुस्लिम)

तथा अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से ही रिवायत है कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''एक उम्रा से दूसरा उम्रा, उनके बीच के गुनाहों का कफ्फारा है, और मबरूर हज्ज का बदला जन्नत ही है।'' (बुखारी व मुस्लिम)

ये दोनों हदीसें हज्ज मबरूर की फज़ीलत के वर्णन में सबसे श्रेष्ठ हदीसें हैं। पहली हदीस में इस बात का वर्णन है कि मबरूर हज्ज गुनाहों को मिटा देता है। उसी को ओर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इस कथन से संकेत किया है : ''वह उस दिन के समान (निर्दोष) हो जाता है जिस दिन उसकी माँ ने उसे जना था।''

दूसरी हदीस में यह वर्णित है कि हज्ज मबरूर का सवाब जन्नत है। दोनों हदीसों से यह फायदा निष्कर्षित होता है कि हज्ज मबरूर वाले आदमी के लिए दुनिया में गुनाहों से उत्पन्न होने वाले प्रकोप से, तथा बर्ज़ख में क़ब्र के अज़ाब से तथा आखिरत में नरक के अज़ाब से सुरक्षित रहने की आशा की जाती है। तथा उसके लिए यह आशा की जाती है कि वह जन्नत वालों में से होगा।

तथा हज्ज की फज़ीलत को दर्शानेवाले प्रमाणों में से अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की यह हदीस भी है कि उन्हों ने कहा :

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया गया कि कौन सा अमल सबसे श्रेष्ठ है? तो आप ने फरमाया : **''अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाना।''**

कहा गया : फिर कौन सा? आप ने फरमाया : **''अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना।''** पूछा गया : फिर कौन सा? आप ने उत्तर दिया : **''मब्रूर हज्ज।''** (बुखारी व मुस्लिम)

तथा उम्मुल मोमिनीन आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की हदीस है कि उन्हों ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल ! हम जिहाद को सबसे अच्छा अमल (कार्य) देखते हैं, तो क्या हम जिहाद न करें? आप ने फरमाया :

''नहीं, लेकिन सर्वश्रेष्ठ और बेहतरीन जिहाद मब्रूर हज्ज है।'' (बुखारी व मुस्लिम)

पहली हदीस में यह वर्णित है कि हज्ज मबरूर ईमान और जिहाद के बाद सबसे अच्छा कार्य है। लेकिन यह ज्ञात होना चाहिए कि फर्ज़ हज्ज स्वैच्छिक जिहाद से बेहतर है। हाफिज़ इब्ने रजब ने फत्हुलबारी में फरमाया : इससे अभिप्राय स्वैच्छिक जिहाद है, यह शरीअत के नियमों के अधिक समान है ; क्योंकि जिसके पास धन है, और उसके ऊपर ज़कात या हज्ज अनिवार्य है, और वह स्वैच्छिक तौर पर जिहाद करना चाहे, तो इसमें कोई मतभेद नहीं है कि वह ज़कात और हज्ज को स्वैच्छिक जिहाद पर प्राथमिकता देगा, जैसाकि अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा का कहना है : जिहाद से पहले एक हज्ज, दस जिहाद से बेहतर है, और हज्ज के बाद एक जिहाद दस हज्ज से बेहतर है। अंत हुआ।

तथा दूसरी हदीस में हज्ज को सबसे बेहतर जिहाद बताया गया है, यह हज्ज की एक महान प्रतिष्ठा है।

तथा हज्ज में ही वह महानतम मौक़िफ (अधिष्ठान) और सम्मानित मश्हद (दृश्य) है और वह अरफा का महान दिन है। वह अधिष्ठान जिसमें दुआयें क़बूल की जाती हैं, रहमतें अवतरित होती हैं, जहन्नम से गर्दनें आज़ाद की जाती हैं और उसमें रहमान सर्वशक्तिमान हाजियों से क़रीब होता है।

आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि उन्हों ने कहा कि : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''अरफा के दिन से बढ़ कर कोई और दिन नहीं है जिसमें अल्लाह तआला अपने बन्दों को सब से अधिक जहन्नम से आज़ाद करता है, (उस दिन) वह क़रीब होता है फिर फरिश्तों के सामने उन पर गर्व करते हुए कहता है : ये लोग क्या चाहते हैं?'' इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

हाफिज़ इब्ने अब्दुल–बर्र ने 'अत्तमहीद' में अरफा में ठहरनेवालों पर गर्व करने की हदीस का उल्लेख करने के बाद फरमाया : इससे पता चलता है कि उन्हें क्षमा कर दिया गया है, क्योंकि वह (अल्लाह) गुनाहगारों और पापियों पर तौबा और क्षमा के बाद ही गर्व करेगा।'' इब्ने अब्दुल बर्र की बात समाप्त हुई।

तथा शैखुल इस्लाम इब्ने तैमियया ने फरमाया :

''यह बात सर्वज्ञात है कि अरफा की पूर्व संध्या पर हाजियों के दिलों पर विश्वास, दया, प्रकाश और बर्कत से ऐसी चीज़ उतरती है जिसे अभिव्यक्त करना संभव नहीं है।''

मजमूअ फतावा शैखुल इस्लाम 5/374.

तथा जब आप – रहिमहुल्लाह – ने अरफा के दिन कुछ धर्म संगत कार्यों का उल्लेख किया तो फरमाया :

''सारांश यह कि यह मौक़िफ एक महान दृश्य और एक सम्मानित दिन है दुनिया में उससे बढ़कर महान और प्रतिष्ठित दृश्य कोई नहीं।' शैखुल इस्लाम की शरहुल उमदा से समाप्त हुआ।

आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की पिछली हदीस में वर्णित जहन्नम से आज़ादी क्या हाजी के अलावा को भी सम्मिलित है?

इब्ने रजब ने लताइफुल मआरिफ में इसका उत्तर इस तरह दिया है :

अरफा का दिन नरक से आज़ादी का दिन है। चुनाँचे अल्लाह तआला अरफा में ठहरने वाले को और उस को भी जो अन्य क्षेत्रों के मुसलमानों में उसमें नहीं ठहरा है, नरक से आज़ाद कर देता है। इसीलिए वह दिन जो इसके बाद है सभी क्षेत्रों के मुसलमानों के लिए, जो उनमें से हज्ज के मौसम में उपस्थित था और जो उपस्थित नहीं था, ईद का दिन बन गया; क्योंकि वे अरफा के दिन नरक से आजादी और क्षमा में भागीदार होते हैं।'' अंत हुआ

हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं हमें हज्ज मबरूर प्रदान करे और हमारे लिए गुनाहों को क्षमा कर दे और अज्र व सवाब को बढ़ा दे। तथा अल्लाह तआला हमारे ईश्दूत मुहम्मद, आपकी संतान और साथियों, सब पर दया और शांति अवतरित करे।

(अनुवाद : अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)

IslamHouse.com